नवरात्रि

वर्ष-1 /अंक-4/ अक्टूबर-2021

भारतीय परम्परा

Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

www.bhartiyaparampara.com

भारतीय परम्परा
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
वर्ष-1 /अंक-4 / अक्टूबर-2021

For Private Circulation Only

प्रकाशन स्थल
मुम्बई

संपादक
प्रीति माहेश्वरी

डिजाइनिंग टीम
MX CREATIVITY

मूल्य
आपका कीमती समय

सम्पर्क सूत्र

www.bhartiyaparampara.com
paramparabhartiya@gmail.com

सोशल कनेक्शन

हमसे जुडने के लिए आइकन पर स्पर्श करें

अक्टूबर माह

Saka Calendar- 1943 Vikram Samvat- 2078 Ayan- Daksinayan Ritu- Sharad

01 शुक्रवार
अश्विन, कृष्ण दशमी

02 शनिवार
इन्दिरा एकादशी
अश्विन,
कृष्ण एकादशी

03 रविवार
अश्विन, कृष्ण द्वादशी

04 सोमवार
प्रदोष व्रत,
मासिक शिवरात्री
अश्विन,
कृष्ण त्रयोदशी

05 मंगलवार
अश्विन, कृष्ण चतुर्दशी

06 बुधवार
सर्वपित्रू श्राद्ध,
श्राद्ध समाप्त
अश्विन,
कृष्ण अमावस्या

07 गुरुवार
घटस्थापना, नवरात्रि
प्रारंभ, मां शैलपुत्री
पूजा, अश्विन,
शुक्ल प्रतिपदा

08 शुक्रवार
मां ब्रह्मचारिणी पूजा
अश्विन, शुक्ल द्वितीया

09 शनिवार
मां चंद्रघण्टा पूजा,
मां कूष्मंडा पूजा,
अश्विन, शुक्ल तृतीया
एवं चर्तुथी

10 रविवार
मां स्कंदमाता पूजा
अश्विन, शुक्ल पंचमी

11 सोमवार
मां कात्यायनी पूजा
अश्विन, शुक्ल षष्ठी

12 मंगलवार
मां कालरात्री पूजा
अश्विन, शुक्ल सप्तमी

13 बुधवार
दुर्गा अष्टमी मां
महागौरी पूजा
अश्विन, शुक्ल अष्टमी

14 गुरुवार
महा नवमी मां
सिद्धिदात्री पूजा
अश्विन, शुक्ल नवमी

15 शुक्रवार
विजय दशमी, दशहरा,
दुर्गा विसर्जन,
अश्विन, शुक्ल दशमी

16 शनिवार
पापांकुशा एकादशी
अश्विन,
शुक्ल एकादशी

17 रविवार
प्रदोष व्रत,
तुला संक्रान्ति
अश्विन, शुक्ल द्वादशी

18 सोमवार
अश्विन,
शुक्ल त्रयोदशी

19 मंगलवार
अश्विन,
शुक्ल चतुर्दशी

20 बुधवार
शरद पूर्णिमा व्रत,
वाल्मिकी जंयती,
अश्विन, शुक्ल पूर्णिमा

21 गुरुवार
कार्तिक, कृष्ण प्रतिपदा

22 शुक्रवार
कार्तिक, कृष्ण द्वितीया

23 शनिवार
कार्तिक, कृष्ण तृतीया

24 रविवार
करवा चौथ व्रत,
संकष्टी चर्तुथी
कार्तिक, कृष्ण चर्तुथी

25 सोमवार
कार्तिक, कृष्ण पंचमी

26 मंगलवार
कार्तिक, कृष्ण पंचमी

27 बुधवार
कार्तिक, कृष्ण षष्ठी

28 गुरुवार
कार्तिक, कृष्ण सप्तमी

29 शुक्रवार
अहोई अष्टमी
कार्तिक, कृष्ण अष्टमी

30 शनिवार
कार्तिक, कृष्ण नवमी

31 रविवार
कार्तिक, कृष्ण दशमी

नवरात्रि की शुरुआत घट स्थापना के साथ ही होती है। घट स्थापना को **कलश स्थापना** भी कहा जाता है। घट स्थापित करके शक्ति की देवी का आह्वान करना होता है। मान्यता है कि गलत समय में घट स्थापना करने से देवी मां क्रोधित हो सकती हैं। रात के समय और अमावस्या के दिन घट स्थापित नहीं करना चाहिए। शास्त्रानुसार, घट स्थापना का सबसे शुभ समय प्रतिपदा का एक तिहाई भाग बीत जाने के बाद होता है। अगर किसी कारण वश आप उस समय कलश स्थापित न कर पाएं, तो अभिजीत मुहूर्त में भी स्थापित कर सकते हैं। प्रत्येक दिन का आठवां मुहूर्त अभिजीत मुहूर्त कहलाता है। सामान्यतः यह 40 मिनट का होता है।

घट स्थापना एवं दुर्गा पूजन की सामग्री -

❀ माँ दुर्गा को लाल रंग अति प्रिय है, इसलिए लाल रंग का आसन ले
❀ जौ बोने के लिए मिट्टी का पात्र ले, जिसे **वेदी** कहते है
❀ जौ बोने के लिए शुद्ध साफ़ की हुई मिट्टी जिसमे कंकर आदि ना हो
❀ पात्र में बोने के लिए जौ या गेहूं भी ले सकते है
❀ घट स्थापना के लिए मिट्टी का कलश (सोने, चांदी या तांबे का कलश भी ले सकते है)
❀ कलश में भरने के लिए नर्मदा या गंगाजल या फिर शुद्ध जल भी ले सकते है
❀ नारियल, लाल या पीली चुनरी, सिंदूर और श्रृंगार दानी
❀ फल तथा मिठाई, दीपक, धूप, अगरबत्ती, फूल और फूलों की माला

❀ रोली, मौली, इत्र, पूजा में काम आने वाली साबुत सुपारी, इलायची, लौंग, दूर्वा, साबुत चावल, कलश में रखने के लिए सिक्का (किसी भी प्रकार का) कुछ लोग चांदी या सोने का सिक्का भी रखते है
❀ पीपल, बरगद, जामुन, अशोक और आम के पांच पत्ते (सभी ना मिल पाए तो कोई भी दो प्रकार के पत्ते ले सकते है)
❀ कलश ढकने के लिए ढक्कन (मिट्टी का या तांबे का)
❀ ढक्कन में रखने के लिए साबुत चावल

घट/कलश स्थापना विधि –

नवरात्रि के पहले दिन यानी कि प्रतिपदा को सुबह जल्दी स्नान से निवृत होकर लाल रंग के कपडे पहने। फिर मंदिर की साफ-सफाई करने के बाद सबसे पहले गणेश जी का नाम लें और फिर माँ दुर्गा के नाम से अखंड ज्योति प्रज्वलित करे।
घट स्थापना के लिए मिट्टी के पात्र में मिट्टी डालकर उसमें जौ के बीज बोएं और एक तांबे के लोटे पर कुंकुम से स्वास्तिक बनाएं। फिर लोटे के ऊपरी हिस्से पर मौली बांधें। इसके बाद लोटे में पानी भरकर उसमें कुछ बूंदें गंगाजल की डाले। उसमें सवा रुपया, दूब, सुपारी, इत्र, अक्षत और अन्य सामग्री डालें। इसके बाद कलश में अशोक या आम के पांच पत्ते लगाएं। अब एक नारियल को लाल कपड़े से लपेटकर मौली से बांध दें और नारियल को कलश के ऊपर रखे। इस कलश को मिट्टी के उस पात्र के ठीक बीचों बीच रखे, जिसमें जौ बोए हैं।

कलश स्थापना के साथ ही नवरात्रि के नौ व्रतों को रखने का संकल्प लिया जाता है, साथ ही माता के नाम की अखंड ज्योति भी जला सकते हैं।

नवरात्रि के दिन और रंग –

दिन	रंग	दिन	रंग
प्रतिपदा		सप्तमी	
द्वितिया		अष्ठमी	
तृतिया		नवमी	
पंचमी		दशमी	
षष्ठी			

अगर आप अपने

‘शब्दों के मोती’

भारतीय परम्परा

‘की माला में पिरोना’

चाहते है तो हमें

सम्पर्क करें!

paramparabhartiya@gmail.com

आपका लेख वेबसाईट पर भी प्रकाशित किया जाएगा

नवरात्रि के पहले दिन मां शैलपुत्री की पूजा

‘ॐ शैलपुत्री देव्यै नमः’

माँ शैलीपुत्री के एक हाथ में त्रिशूल और दूसरे हाथ में कमल है और ये देवी वृषभ पर विराजमान हैं |

कथा, मंत्र, आरती और भोग जानने के लिए आॅइकन को स्पर्श करे

नवरात्रि के दुसरे दिन मां ब्रह्मचारिणी की पूजा

‘ॐ देवी ब्रह्मचारिणीयै नमः’

माँ ब्रह्मचारिणी के दाहिने हाथ में जप की माला व बाएं हाथ में कमंडल है।

कथा, मंत्र, आरती और भोग जानने के लिए आॅइकन को स्पर्श करे

नवरात्रि के तीसरे दिन मां चंद्रघंटा की पूजा

‘ॐ देवी चन्द्रघण्टायै नमः’

माँ की मुद्रा युद्ध मुद्रा है। माता अपने मस्तक पर घंटे के आकार का चंद्रमा धारण किये हैं।

कथा, मंत्र, आरती और भोग जानने के लिए आॅइकन को स्पर्श करे

नवरात्रि के चौथे दिन मां कूष्मॉंडा की पूजा

‘ॐ कूष्मांडा देव्यै नमः’

चेहरे पर हल्की मुस्कान लिए माँ की आठ भुजाएं हैं। इसलिए इन्हें **‘अष्टभुजा’** भी कहा जाता है।

कथा, मंत्र, आरती और भोग जानने के लिए आॅइकन को स्पर्श करे

इस बार नवरात्रि का तीसरा और चौथा दिन एक साथ है।

शुभ नवरात्रि

नवरात्रि के पाँचवे दिन मां स्कंदमाता की पूजा

'ॐ देवी स्कंदमातायै नमः'

स्कंदमाता शेर पर सवार पुत्र सनत कुमार को पकडे है, इनकी चार भुजाएं हैं।

कथा, मंत्र, आरती और भोग जानने के लिए ऑइकन को स्पर्श करे

नवरात्रि के छठे दिन मां कात्यायनी की पूजा

'ॐ कात्यायनी देव्यै नमः'

माँ कात्यायनी का स्वरूप अत्यंत चमकीला और भव्य है और माँ के चार भुजाएं हैं ।

कथा, मंत्र, आरती और भोग जानने के लिए ऑइकन को स्पर्श करे

नवरात्रि के सातवे दिन मां कालरात्री की पूजा

'ॐ देवी कालरात्र्यै नमः'

देवी कालरात्रि का स्वरूप अत्यंत भयंकर है, जो पापियों का नाश और दुष्टों का संहार के लिए है।

कथा, मंत्र, आरती और भोग जानने के लिए ऑइकन को स्पर्श करे

नवरात्रि के आठवे दिन मां महागौरी की पूजा

'ॐ महा गौरी देव्यै नमः'

महागौरी का रंग अत्यंत गौरा है इसलिए इन्हें महागौरी कहते है। इनकी आयु आठ साल की है।

कथा, मंत्र, आरती और भोग जानने के लिए ऑइकन को स्पर्श करे

नवरात्रि के नवमे दिन मां सिद्धिदात्री की पूजा

'ॐ देवी सिद्धिदात्र्यै नमः'

सिद्धि दायी माता सिद्धिदात्री कमल पर विराजमान हैं। माता की चार भुजाएं हैं।

कथा, मंत्र, आरती और भोग जानने के लिए आॅइकन को स्पर्श करे

विजयदशमी, दशहरा और आयुध पूजा का महत्व

पंचांग के अनुसार आश्विन मास की शुक्ल पक्ष की दशमी को विजयदशमी, दशहरे अथवा आयुध पूजा के रूप में देशभर में मनाया जाता है। दशहरा हिंदुओं के प्रमुख त्योहारों में से एक है। यह पर्व अच्छाई की बुराई पर जीत का प्रतीक है।

इसी दिन पुरुषोत्तम भगवान राम ने रावण का वध किया था। यह त्यौहार विजयदशमी के रूप में जाना जाता है। मां दुर्गा ने नौ रात्रि और दस दिन के युद्ध के बाद राक्षस महिषासुर का वध किया था।

इसके अलावा इस त्यौहार को आयुध पूजा(शस्त्र पूजा) के रूप में भी मनाया जाता हैं। इस दिन लोग शस्त्र-पूजा करते हैं और नया कार्य प्रारम्भ करते हैं (जैसे अक्षर लेखन का आरम्भ, नया उद्योग आरम्भ, बीज बोना आदि)। ऐसा विश्वास है कि इस दिन जो कार्य आरम्भ किया जाता है उसमें विजय मिलती है।

इस दिन जगह-जगह मेले लगते हैं। रामलीला का आयोजन होता है। रावण का विशाल पुतला बनाकर उसे जलाया जाता है। दशहरा अथवा विजयदशमी भगवान राम की विजय के रूप में मनाया जाए अथवा दुर्गा पूजा के रूप में, दोनों ही रूपों में यह 'शक्ति-पूजा' का पर्व कहलाता है। हम में से बहुत कम लोग यह जानते होंगे कि आज का यह पवित्र दिन एक अबूझ मुहूर्त भी है।

आईये जानते है कि आज का दिन विजयदशमी, दशहरा और आयुध पूजा के अलावा और कैसे मनाते है –

- दशहरे का दिन साल के सबसे पवित्र दिनों में से एक माना जाता है। यह साढ़े तीन मुहूर्त में से एक है **(साल का सबसे शुभ मुहूर्त - चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, आश्विन शुक्ल दशमी, वैशाख शुक्ल तृतीया, एवं कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा (आधा मुहूर्त))**। यह अवधि किसी भी चीज़ की शुरुआत करने के लिए उत्तम है। हालांकि कुछ निश्चित मुहूर्त किसी विशेष पूजा के लिए भी हो सकते हैं।
- **'अपराजिता पूजा'** को विजयादशमी का महत्वपूर्ण भाग माना जाता है।
- जब सूर्यास्त होता है और आसमान में कुछ तारे दिखने लगते हैं तो यह अवधि **'विजय मुहूर्त'** कहलाती है। इस समय कोई भी पूजा या कार्य करने से अच्छा परिणाम प्राप्त होता है। कहते हैं कि भगवान श्रीराम ने रावण को हराने के लिए युद्ध का प्रारंभ इसी मुहूर्त में किया था और इसी समय **'शमी नामक पेड़ ने अर्जुन के गाण्डीव नामक धनुष'** का रूप लिया था।
- क्षत्रिय, योद्धा एवं सैनिक इस दिन अपने शस्त्रों की पूजा करते हैं; यह पूजा **'आयुध/शस्त्र पूजा'** के रूप में भी जानी जाती है।
- इस दिन **'शमी पूजन'** भी होती हैं, जिसे पुरातन काल में राजशाही के लिए क्षत्रियों के लिए यह पूजा मुख्य मानी जाती थी।
- ब्राह्मण इस दिन **'माँ सरस्वती'** की पूजा करते हैं।
- वैश्य अपने **'बही खाते'** की आराधना करते हैं।
- कई जगहों पर होने वाली **'नवरात्रि रामलीला'** का समापन भी आज के दिन होता है।
- रावण, कुंभकर्ण और मेघनाथ का पुतला जलाकर भगवान राम की जीत का जश्न मनाया जाता है।
- **बंगाल में माँ दुर्गा पूजा** का त्यौहार भव्य रूप में मनाया जाता है।
- महाराष्ट्र में इसे **'शिलंगण'** के नाम से सामाजिक महोत्सव के रूप में मनाया जाता है।
- कश्मीर में **'खीर भवानी'** के नाम से यह त्यौहार मनाते है |
- गुजरात का **'गरबा (डांडिया)'** की धूम तो विश्व प्रसिद्ध है|

आप सभी को और आपके परिवार को विजयदशमी, दशहरा और आयुध पूजा पर्व की हार्दिक बधाई।

भारतीय परम्परा

की मासिक ई-पत्रिका

नियमित प्राप्त करने हेतु हमें सम्पर्क करें!

- ❖ व्हाट्सप्प और टेलीग्राम पर से हर महीने के शुरू में नया अंक प्रेषित किया जाता है। यदि किसी कारणवश आपको नया अंक नहीं मिला हो तो कृपया हमें सूचित करें।

- ❖ ई-पत्रिका में जहाँ कहीं भी सोशल मीडिया के आइकॉन बने हुवे है उन्हें स्पर्श करने पर आप उस लिंक पर इंटरनेट के माध्यम से पहुँच सकते है।

- ❖ ई-पत्रिका में कुछ त्रुटियाँ हो तो हमें जरूर बताये और आपको पत्रिका पसंद आये तो अपने परिवारजनों और मित्रों के साथ शेयर करें।

- ❖ **भारतीय परंपराओं** को संजोये रखने एवं ई-पत्रिका को सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए आपके सुझावों और विचारों से अवगत जरूर कराये।

लघुकथा - कन्या पूजन

नवरात्रि के नौ दिन कमला देवी घी का दीपक लगा अखंड ज्योत प्रज्वलित रखती घर में नित्य आरती धूप होती, अखंड पाठ चलता पूरा घर भक्तिमय तरंगों से पावन हो जाता। अष्टमी पर बेटा, बहू भी एक हफ्ते की छुट्‌टी लेकर आ जाते और फिर घर में रौनक छा जाती। आज नवमी थी और सुबह सुबह रत्ना बाई का फोन आ गया आज उसकी तबियत खराब थी उसने जैसे ही दो दिन छुट्‌टी का बोला, कमला देवी आग बबूला हो उठी जिस दिन अधिक काम होता है तुम जानबूझकर ऐसा करती हो तरह तरह के आरोप प्रत्यारोप लगाने के पश्चात आवेश में आकर बोली अब दूसरा घर देख लेना यहां आने की कोई जरूरत नहीं कहकर फोन पटक दिया। मौन साधे बहू सब कुछ सुन रही थी।

कुछ ही देर में एक एक कर नौ कन्याओं का आगमन हुआ सभी आज बहुत घरों में जाकर आयी थी इसलिए भोजन तो दूर नाम मात्र प्रसाद ले रहीं थी वह भी बड़ी मनुहार करने के बाद छोटी छोटी बच्चियां आखिर खा भी कितना पाती फिर सभी को कुमकुम का तिलक किया उनके पैर धोये उनका आशीर्वाद लिया सभी को भेंट वस्तू दी तत्पश्चात पूरा परिवार भोजन करने बैठा, तभी रत्ना की बेटी आयी कहने लगी माँ ने भेजा है आज बर्तन मैं मांज देती हूँ।

कमला देवी खुश हो गई जैसे कोई जंग जीत गई हों कहने लगी जब तक इन्हें डराओं धमकाओं नहीं यह अपनी आदतों से बाज नहीं आते। छुटकी को आवाज लगा कहने लगी यह बर्तन समेटकर ले जाओं। छुटकी भीतर आयी बारह तेरह की उम्र हड़बड़ी में कुछ बर्तन हाथ से फिसल फर्श से टकरा गये कमला देवी आंखें तरेर कर उसपर बरस पड़ी। यह सब देख रहीं बहू के धीरज का बांध अब जवाब दे गया उसने कहां माँ आज एक तरफ आप कन्या पूजन कर पुण्य प्राप्त करना चाहते हैं और दूसरी तरफ किसी जरूरतमंद मासूम नाबालिग पर अत्याचार यह तो न्याय संगत नहीं हैं...आप ने जिन्हें भोजन करवाया वह तो संपन्न परिवार में नाजों से पल रहीं कलियां हैं जो हमारे आमंत्रण पर मात्र औपचारिकता निभाने आती है। माँ कुछ परम्पराओं में हमें परिवर्तन लाना होगा तभी देवी मां प्रसन्न

होगी। काम होने के पश्चात बहू ने छुटकी को भोजन कराया ऐसा स्वादिष्ट भोजन खाकर उसकी आत्मा को जैसे तृप्ति मिल गई खुशी के भाव उसके चेहरे पर साफ नजर आने लगे बहू ने उसे नई फ्रॉक भेंट की अब तो उसकी खुशी मानों आसमान छू रही थी दूसरे दिन जब रत्ना बाई घर आयी तो बहू ने कहा छुटकी के पढाई का खर्च हर साल नवरात्रि में मुझसे ले लिया करों। कमला देवी ने बहू से कहा बेटी कन्या पूजन की वास्तविक सार्थकता तो नेक कार्य में है तुमने मेरी आँखें खोल दी, अब मैं भी नवरात्रि में एक जरूरतमंद बेटी के शिक्षा और उसके निर्वहन का दायित्व लेती हूँ।

– राजश्री राठी जी

कविता संग्रह

“आया व्रत करवा चौथ का
त्यौहार यह साजों-श्रृंगार का
दिल में पिया जी के प्रेम का
आंखों में भरा मान सम्मान का।
बिंदी, झुमका, कंगन, चूड़ी
बोले एक ही बोली
अमर रहे सदा सुहाग मेरा
बढ़ता रहे जग में नाम तेरा।
पायल, बिछिया, मेहंदी के रंग
बोले हम साथ रहे जनम जनम
लाल चुनरी भी तो कुछ है बोली
गर्दन ऊंची रहे सदा गर्व से मेरी।
हमारे संसार के दो ही पहिए
एक मैं और एक तुम
चौथ माता हम पर बरसाती रहे
यूं ही आशीर्वाद के सुमन।।”

- योगिता सदानी जी

जीवन एक संसार

भलाई करते रहिये
बहते पानी की तरह
बुराई खुद ही किनारे
लग जाएगी कचरे की तरह।

एक सपने के टूटकर
चकनाचूर हो जाने के बाद
दूसरा सपना देखने के हौंसले
को 'जिंदगी' कहते है।

विश्वास तो दर्पण है
तोड़ो तो पहले जैसा रूप नहीं
और जोड़ो तो
पहले जैसा अक्स नहीं

मिट्टी का मटका और परिवार
की कीमत सिर्फ बनाने वाले को
ही पता होती है
तोड़ने वाले को नहीं ।

वक्त से लडकर जो नसीब बदल दे
इन्सान वही जो अपनी तकदीर बदल दे
कल क्या होगा कभी मत सोचो
क्या पता कल वक्त
खुद अपनी तस्वीर बदल दे ।

झूठ किसी भी संबंध का अंत
करने में अहम भूमिका निभाता है
क्योंकि सच आज नहीं तो कल
सामने आ ही जाता है।

शरद पूर्णिमा

अश्विन मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को शरद पूर्णिमा मनाई जाती हैं। हिंदू धर्म में शरद पूर्णिमा का बहुत महत्व अधिक है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इस दिन मां लक्ष्मी का जन्म हुआ था। मां लक्ष्मी दिवाली के दिन अवतरित हुई थी और उसके बाद किसी कार्य को पूर्ण करने के लिए उन्होंने फिर से धरती पर लक्ष्मी नाम से जन्म लिया। इसलिए इस दिन को देवी लक्ष्मी के आगमन का दिन भी

माना जाता है। इस दिन चंद्रमा अपनी समस्त कलाओं में परिपूर्ण होता है और माना जाता है कि इस दिन चंद्रमा की किरणों से अमृत की बरसात होती है। इस दिन की चांदनी सबसे ज्यादा तेज प्रकाश वाली होती है। सबसे अहम बात देवी और देवताओं को सबसे ज्यादा प्रिय पुष्प **"ब्रह्म कमल"** भी शरद पूर्णिमा की रात को ही खिलता है। धर्म शास्त्रों के अनुसार, इस दिन किए गए धार्मिक अनुष्ठान कई गुना अधिक फल देते हैं। जो मनुष्य शरद पूर्णिमा का व्रत विधि-विधान तथा पूर्ण श्रद्धा से करता है उस पर माता लक्ष्मी की कृपा होती है और उसकी उम्र भी लंबी होती है।

शरद पूर्णिमा का महत्व -

कहते है कि शरद पूर्णिमा के दिन चंद्रमा धरती के बेहद पास होता है। जिसकी वजह से चंद्रमा से जो रासायनिक तत्व धरती पर गिरते हैं वह काफी सकारात्मक ऊर्जा वाले होते हैं और जो भी इसे ग्रहण करता है उसके अंदर सकारात्मकता बढ़ जाती है। इस दिन मां लक्ष्मी धरती पर विचरण करती हैं। इसलिए शरद पूर्णिमा को बंगाल में **"कोजागरा"** भी कहा जाता है जिसका अर्थ है कौन जाग रहा है। शरद पूर्णिमा को **"कोजागरी पूर्णिमा"**, **"रास पूर्णिमा"** और **"कौमुदी महोत्सव"** के नाम से भी जाना जाता है। शरद पूर्णिमा के दिन चंद्रमा की चांदनी में अगर खीर बना कर रखी जाए और उसे अगले दिन खाया जाए तो व्यक्ति के शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है और इससे श्वास / दमा के रोगियों को भी लाभ होता है। इससे आंखों की रोशनी भी अच्छी होती है। इस पूर्णिमा के बाद से ही धीरे-धीरे सर्दी का मौसम भी शुरू होने लगता है। इस दिन माता लक्ष्मी की विशेष पूजा अर्चना की जाती है।

शरद पूर्णिमा की खीर का महत्व -

- शरद पूर्णिमा की रात खीर बनाकर खुले आसमान के नीचे रखने की परंपरा है। शरद पूर्णिमा की रात चांद अपनी पूरी सुंदरता बिखेरता है। इस रात चांद से निकलने वाली शीतल किरणें हमारे स्वास्थ्य के लिए काफी फायदेमंद होती हैं।
- धार्मिक मान्यता है कि इस रात चांद से अमृत बरसता है। इस रात खुले आसमान के नीचे खीर रखने से चांद से निकलने वाली किरणें सीधे खीर पर पड़ती है।
- चांद की किरणों के प्रभाव से खीर में औषधीय गुण शामिल हो जाते हैं जिससे इस खीर को खाने से बहुत सी बीमारियों में राहत मिलती है।
- आँखों की रौशनी के लिए यह खीर बहुत लाभदायक है।
- दमा रोगियों के लिए यह खीर बहुत अच्छी औषधि मानी जाती है।
- सिर दर्द या माइग्रेन की बीमारी वालो को भी यह खीर खानी चाहिए।
- यह खीर खाने से शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाती है |

शरद पूर्णिमा के उपाय –

- **शरद पूर्णिमा की रात में सुई में धागा पिरोने का अभ्यास करने की परंपरा है।** इसके पीछे कारण ये है कि सुई में धागा डालने की कोशिश में चंद्रमा की ओर एकटक देखना पड़ता है जिससे चंद्रमा की सीधी रोशनी आंखों में पड़ती है। इससे नेत्र ज्योति बढ़ती है।

- अगर **किसी जातक की कुंडली में चंद्रमा नीच के स्थान में या क्षीण हो, या महादशा चल रही हो** और चंद्रमा छठवें, आठवें या बारहवें भाव में हो तो शरद पूर्णिमा की रात चन्द्रमा की पूजा करते हुए स्फटिक माला से **"ॐ सों सोमाय मंत्र"** का जाप करें। ऐसा करने से चंद्र दोष से शांति मिलेगी।

- इस दिन रात्रि में की गई लक्ष्मी पूजा सभी कर्जों से मुक्ति दिलाती हैं। अतः शास्त्र में शरद पूर्णिमा को **'कर्ज मुक्ति' पूर्णिमा** भी कहते हैं।

- पूर्ण चंद्रमा के मध्याकाश में स्थित होने पर उसका पूजन कर अर्घ्य प्रदान करना चाहिए। जिससे पति - पत्नी के जीवन में क्लेश से मुक्ति मिलती है।

- शरद पूर्णिमा की रात चन्द्रमा की चांदनी गर्भवती महिला की नाभि पर पड़े तो गर्भ पुष्ट होता है।

- शास्त्रों में कहा गया है कि हर पूर्णिमा के दिन पीपल के वृक्ष पर मां लक्ष्मी का आगमन होता है। अतः सुबह जल्दी उठकर स्नान आदि से निवृत्त होकर पीपल के पेड़ पर कुछ मीठा चढ़ाकर जल जरूर अर्पित करें।

- शरद पूर्णिमा के दिन व्यक्ति को सिर्फ सात्विक आहार ही ग्रहण करना चाहिए। व्यक्ति को इस दिन तामसिक भोजन और हर तरह के नशे से दूर रहना चाहिए।

शरद पूर्णिमा पर धन प्राप्ति के लिए करें ये उपाय –

- शरद पूर्णिमा के दिन सुबह स्नान करने के बाद तुलसी को जल चढ़ाएं और शाम के वक्त तुलसी के नीचे घी का दीपक जलाने से मां लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं।
- रात को मां लक्ष्मी के सामने घी का दीपक जलाकर उन्हें गुलाब के फूलों की माला पहनाएं।
- मां लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए उन्हें सफेद मिठाई का भोग लगाएं। इनमें खीर, मखाना, दही, पान और पताशे आदि हो सकते है।
- शरद पूर्णिमा के दिन मां लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए इस मंत्र की 11 माला का जाप करें - **"ॐ ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद महालक्ष्म्यै नमः"**।
- विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ भी करना चाहिए।
- मां लक्ष्मी का आगमन साफ-सुथरे घर में होता है। इसलिए शरद पूर्णिमा के दिन पूरे घर की अच्छे से साफ-सफाई करें और ध्यान रखें कि घर के किसी भी कोने में अंधेरा न रहे।
- शरद पूर्णिमा के दिन स्नान के पश्चात मुख्य द्वार पर हल्दी मिलाकर पानी की छींटे लगाएं।

शरद पूर्णिमा के दिन मां लक्ष्मी की कृपा आप पर सब पर बनी रहे यही हमारी मनोकामना है।

शरद पूर्णिमा

की कहानी और
पूजा की विधि

ऑइकन को स्पर्श करे

पनीर पुडिंग

पूनम राठी जी

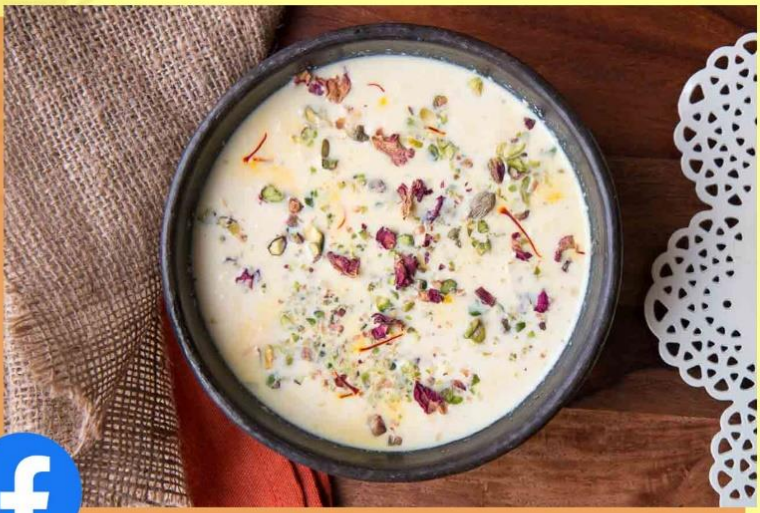

विविधा कुकिंग क्लासेस

सामग्री –

2 कप पनीर, 1-1/2 कप दूध पाउडर, 1 कप मलाई, 2 कप दूध, 1/2 कप सुखा मेवा कतरन, एक चम्मच इलायची पाउडर, 1/2 चम्मच केवडा एसेंस या गुलाब जल, पुडिंग बनाने का पात्र और 2 कप शक्कर

विधि –

दूध को एक उबाल आने तक गर्म करें फिर उसने दूध पाउडर, शक्कर और कसा हुआ पनीर डाल दें। थोड़ा गाढ़ा हो जाए तब उसमें मलाई, इलायची पाउडर और सूखा हुआ मेवा कतरन थोड़ा डालकर गाढ़ा होने तक पकाएं। गैस से नीचे उतारकर उस में गुलाब जल या केवड़ा जल (एसेंस) डालें। पुडिंग के बर्तन को थोड़ा सा ग्रीस करके बचा हुआ मेवा नीचे डाल दे, ऊपर से तैयार मिश्रण डालकर फ्रिज में सेट करने के लिए रख दें। आधे घंटे बाद प्लेट में डिमोल्ड कर दीजिए। **माता रानी को भोग लगाने के लिए पुडिंग तैयार है।**

किचन टिप्स –

- अगर आप रात को चने, छोले भिगोना भूल गए हैं, तो कोई बात नहीं सुबह उन्हें 2 घंटे के लिए गर्म पानी में भिगो कर रखें और उबालते समय उसमें दो खड़ी सुपारी डाल दे।
- ग्रेवी के लिए अदरक लहसुन का पेस्ट तैयार करते समय हमेशा लहसुन की मात्रा 60% और अदरक की मात्रा 40% होनी चाहिए, क्योंकि अदरक का स्वाद बहुत स्ट्रांग होता है।
- खसखस को 10-15 मिनट पानी में भीगने दें, बाद में मिक्सर पिसे, इससे वह अच्छी तरह पिस जाएगी।

करवा चौथ हिन्दुओं का एक प्रमुख त्यौहार है। यह पर्व भारत के पंजाब, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, मध्य प्रदेश और राजस्थान में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है।

करवा चौथ का त्यौहार कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को मनाया जाता है। इसे **"करक चतुर्थी"** भी कहा जाता है। इस दिन विवाहित स्त्रियां अपने पति की दीर्घायु के लिए व्रत रखती है। सौभाग्यवती स्त्री किसी भी आयु, जाति, वर्ण, संप्रदाय की हो, अपने पति की आयु, स्वास्थ्य व सौभाग्य की कामना के लिए यह व्रत करती है। यह व्रत सौभाग्य और शुभ संतान देने वाला हैं। इस व्रत में महिलाएं पूरे दिन निर्जला रहती हैं और शाम को चाँद की पूजा के बाद व्रत खोलती हैं।

सावित्री के त्याग और फल से ही शुरू हुई थी करवा चौथ व्रत की प्रथा, अन्न जल त्याग यमराज से पति (सत्यवान) के प्राण वापस लाई थी। तभी से सभी सुहागिनें अन्न जल त्याग कर अपने पति की लम्बी उम्र के लिए इस व्रत को श्रद्धा के साथ करती हैं। इसके अलावा महाभारत काल में इसके व्रत के संकेत मिलते है। महाभारत से संबंधित पौराणिक कथा के अनुसार पांडव पुत्र अर्जुन तपस्या करने नीलगिरी पर्वत पर गये। दूसरी ओर बाकी पांडवों पर कई प्रकार के संकट आ जाते हैं। तब द्रौपदी भगवान श्रीकृष्ण से इसका उपाय पूछती हैं तो वह कहते हैं कि यदि वह कार्तिक कृष्ण चतुर्थी के दिन करवा चौथ का व्रत करें तो इन सभी संकटों से मुक्ति मिल सकती है। द्रौपदी ने विधि विधान सहित करवा चौथ का व्रत किया था जिससे उनके समस्त कष्ट दूर हो गये।

करवा चौथ व्रत के नियम –

❀ यह व्रत सूर्योदय से पहले से शुरू होता है जो चाँद निकलने तक रखा जाता है और चन्द्रमा को अरख दे कर व्रत को खोला जाता है।

❀ व्रत के दिन प्रातः स्नानादि करने के यह संकल्प बोलकर करवा चौथ व्रत का आरंभ करें- **'मम सुखसौभाग्य पुत्रपौत्रादि सुस्थिर श्री प्राप्तये करक चतुर्थी व्रतमहं करिष्ये।'**

❀ इस व्रत में सूर्योदय से पहले सरगी खाने का रिवाज है, घर की महिलाएं ४ बजे उठकर सरगी खाती है जो व्रत के लिए दिनभर ऊर्जा देती है। यह रिवाज कुछ जगह पर ही है, इसलिए अपने परंपरा के अनुसार ही व्रत रखना चाहिए।

❀ दीवार पर गेरू से फलक बनाकर पिसे चावलों के घोल से करवा चित्रित करें, इसे **'वर'** कहते हैं। चित्रित करने की कला को 'करवा धरना' कहा जाता है।

❀ इस व्रत में महिलाओं को मेहंदी लगानी चाहिए और सोलह श्रृंगार करके पूजा करनी चाहिए ।

❀ पीली मिट्टी से गौरी बनाएं और उनकी गोद में गणेशजी बनाकर बिठाएं। शाम के समय चंद्रोदय से पहले सम्पूर्ण शिव-परिवार (शिव जी, पार्वती जी, नंदी जी, गणेश जी और कार्तिकेय जी) और चौथ माता की पूजा की जाती है।

❀ पूजन के समय देव-प्रतिमा का मुख पश्चिम की तरफ़ होना चाहिए तथा स्त्री को पूर्व की तरफ़ मुख करके बैठना चाहिए।

❀ पूजा में एक मिट्टी का करवा जरूरी है, जिसमे जल भरना है और करवे में 1 काचरा, मूंग के दाने, चवले की दाल या चवले की फली, पुष्प, गुड़ आदि 5 वस्तु डाले। इसके बाद लाल कपड़े से करवे का मुंह ढककर मोली से बांध दे।

❀ गौरी-गणेश और चित्रित करवा की परंपरानुसार पूजा कर, पति की दीर्घायु की कामना करें और प्रभु से विनती करे - **"नमः शिवायै शर्वाण्यै सौभाग्यं संतति शुभाम्। प्रयच्छ भक्तियुक्तानां नारीणां हरवल्लभे॥"**

❀ पूजा के बाद चौथ माता, विनायक जी और लपसी तपसी की कहानी सुने।

❀ चंद्रोदय के बाद चाँद को अरख दे, चंद्रमा को छलनी से देखे और फिर पति को भी उसी छलनी से देखे। कुछ जगह पर छलनी से देखने का रिवाज नहीं है और व्रत भी सास पानी पिलाकर खुलवाती है।

❀ करवे में से पानी पीते समय यह बोले - **"जल धाई सुहाग नी धाई"** 7 बार पानी पिए और यह बोले। उसके बाद कल्पना निकल कर सासु माँ, जेठानी या नन्द को पैर छूकर देवे। घर के सभी लोग साथ में भोजन ले सकते है।

करवा चौथ की सरगी –

पंजाब में करवा चौथ का त्यौहार सरगी के साथ आरम्भ होता है। यह करवा चौथ के दिन सूर्योदय से पहले किया जाने वाला भोजन होता है। जो महिलाएँ इस दिन व्रत रखती हैं उनकी सास उनके लिए सरगी बनाती हैं। शाम को सभी महिलाएं श्रृंगार करके एकत्रित होती हैं और फेरी की रस्म करती हैं। इस रस्म में महिलाएँ एक घेरा बनाकर बैठती हैं और पूजा की थाली एक दूसरे को देकर पूरे घेरे में घुमाती हैं। इस रस्म के दौरान एक बुजुर्ग महिला करवा चौथ की कथा गाती हैं। भारत के अन्य प्रदेश जैसे उत्तर प्रदेश और राजस्थान में गौर माता की पूजा की जाती है। गौर माता की पूजा के लिए प्रतिमा गाय के गोबर से बनाई जाती है।

करवा चौथ के व्रत में छलनी का महत्व –

करवा चौथ के व्रत में छलनी का विशेष महत्व है। इस दिन पूजा की थाली में सुहागिन महिलाएं पूजा की सामग्री के साथ छलनी भी रखती है। चाँद निकलने के बाद सुहागिन छलनी में पहले दीपक रखकर चाँद को देखती हैं और फिर अपने पति को देखती हैं। छलनी में चाँद और पति का चेहरा देखकर यह व्रत पूरा करने के पीछे यह है कि मान्यता है कि चंद्रमा भगवान ब्रह्मा का स्वरूप होता है और चाँद को लंबी आयु का वरदान मिला हुआ है। चाँद में सुंदरता, शीतलता, प्रेम, प्रसिद्धि और लंबी आयु जैसे गुण होते हैं इसलिए सभी महिलाएं चाँद को छलनी से देखकर ये कामना करती हैं कि ये सभी गुण उनके पति में भी आ जाएं।

उद्यापन –

अटल सुहाग के देने वाली करवा चौथ माता सभी तेरह चौथ में सबसे बड़ी है। जब लड़की की शादी हो जाती है तब से इसी चौथ से व्रत प्रारम्भ किया जाता है। लड़की के मायके से गिलास या लोटे में शक्कर भरकर आती है। चौथ का उद्यापन करने के लिए 13 सुहागिनों को भोजन करवाकर सुहाग का सामान देते है। यदि भोज नही करना है तो घर पर भोजन भेज सकते है और नहीं तो 13 घेवर भी कल्प सकते है। साडी उस पर सुहाग का सामान(सिंदूर, बिंदी, काजल, मेहंदी, चूड़ी या कंगन आदि), सोने का लोंग, चाँदी की पायल और बिछिया सास या ननद को कल्प कर देवे और उनसे आशीर्वाद लेवे।

करवा चौथ व्रत
की कहानी और पूजा की विधि
ऑइकन को स्पर्श करे

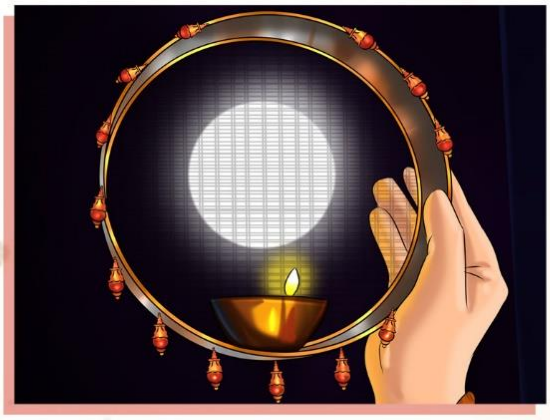

हँसी खुशी के पल

कार से टकराकर एक कबूतर
बेहोश हो गया
एक आदमी उसे उठाकर घर ले आया
और पिंजरे में डाल दिया
कबूतर को जब होश आया तो बोला
'आईला जेल हो गयी, वो
कार वाला मर गया क्या!'

आज का ज्ञान -
नींद के पीछे मत भागों
भागना है तो पढाई के पीछे
भागो नींद अपने आप
झकमार के आएगी।

अगर आप चाहते है कि
सब लोग आपको हमेशा
'अच्छा' कहे, तो...
अपना नाम ही
'अच्छा' रख लें।
दूसरा कोई रास्ता नहीं है।

मंदिर में संता - हे भगवान
मेरी सरकारी नौकरी लगवा दो..
भगवान - क्यों खाली हाथ आये।
प्रसाद, नारियल, फल और माला
नहीं लाए...?
संता - भगवान जी आप कर्म
करो, फल की चिंता मत करो!

पिता - बेटा, अगर चोर पीछे के
दरवाजे से घर में घुस जाए तो तुम
सबसे पहले क्या करोगे?
बच्चा- तो मैं 001 पर फोन
करूंगा, तो पुलिस भी पीछे
के दरवाजे से आएगी।

अहोई अष्टमी

कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को अहोई अष्टमी का व्रत रखा जाता है। अहोई अष्टमी के दिन अहोई माता की पूजा की जाती है। जहां करवा चौथ का व्रत महिलाएं अपने पति की लंबी उम्र के लिए रखती हैं तो वहीं अहोई अष्टमी का व्रत महिलाएं अपनी संतान की लम्बी आयु और उन्हें सभी प्रकार की विपत्ति से बचाने के लिए रखती हैं, जिससे उनके जीवन में सुख और समृद्धि का सदा वास हो। शास्त्रों के अनुसार जिन महिलाओं को संतान की प्राप्ति नहीं हुई है वह भी इस व्रत को रखती है तो उन्हें भी संतान सुख की प्राप्ति होती है।

जहां करवा चौथ के व्रत में महिलाएं चंद्रमा को अरख देकर अपना व्रत खोलती हैं। वहीं अहोई अष्टमी के व्रत में तारों को अरख देखकर व्रत खोला जाता है। अहोई अष्टमी के व्रत में नया करवा नहीं लिया जाता है, करवा चौथ का करवा ही दोबारा काम में लेते है। अहोई अष्टमी पर चाकू से सब्जी या किसी नुकीली चीज जैसे सुई का इस्तेमाल नहीं करते हैं। अहोई माता का चित्र गेरू से दीवार पर बनाया जाता है अथवा किसी मोटे वस्त्र पर अहोई काढकर पूजा के समय उसे दीवार पर टांग दिया जाता है। अहोई के चित्रांकन में ज्यादातर आठ कोष्ठक की एक पुतली बनाई जाती है। उसी के पास साही तथा उसके बच्चों की आकृतियां बना दी जाती हैं। उत्तर भारत के विभिन्न अंचलों में अहोई माता का स्वरूप वहां की स्थानीय परंपरा के अनुसार बनता है। सम्पन्न घर की महिलाएं चांदी की होई बनवाती हैं। जमीन पर गोबर से लिप के कलश की स्थापना होती है। अहोई माता की पूजा करके उन्हें दूध-चावल का भोग लगाया जाता है।

अहोई अष्टमी की पूजा विधि -

❀ अहोई अष्टमी के दिन महिलाओं को सूर्योदय से पहले उठकर घर की पूरी साफ- सफाई करनी चाहिए और स्नान करके साफ वस्त्र धारण करने चाहिए।

❀ इसके बाद पूजा पाठ करके संकल्प करें कि संतान की लम्बी आयु एवं सुखमय जीवन हेतु - मैं अहोई माता का व्रत कर रही हूं। अहोई माता मेरी संतानों को दीर्घायु, स्वस्थ एवं सुखी रखें।

❀ इस दिन महिलाओं को पूरा दिन व्रत रखना चाहिए और शाम के समय अहोई माता की पूजा करनी चाहिए। अनहोनी को होनी बनाने वाली माता देवी पार्वती हैं, इसलिए माता पार्वती की पूजा भी करें।

❀ इसके बाद एक चावल की कटोरी में मूली, सिंघाड़े और पानी से भरा एक करवा या लोटा रखें। अगर यह करवा, करवा चौथ का हो तो ज्यादा अच्छा है। इस करवे का पानी दिवाली के दिन पूरे घर में छिड़का जाता है।

❀ यह सभी सामग्री रखने के बाद अहोई माता की कथा कहे। जिस समय महिलाएं कथा सुन रही हों उस समय उन्हें अपनी साड़ी के पल्लू से चावल बांध लेने चाहिए।

❀ इसके बाद अहोई माता को चौदह पूड़ी और आठ पूओं का भोग लगाए, तारों की छांव में अरख दें और भोजन करे। अहोई माता के भोग को दूसरे दिन गाय को खिलाना चाहिए।

❀ घर में कोई नया बच्चा होता है तो उसके नाम का अहोई माता का कैलेंडर इस साल लगाना चाहिए। यह कैलंडर, जहाँ हमेशा का अहोई माता का कैलेंडर लगाया जाता है, उसके दायी तरफ लगाते हैं। जब बच्चा होता है तब उसी साल **कुण्डवारा** भरा जाता है। कुण्डवारे में चौदह कटोरियाँ/ सर्रियाँ, एक लोटा, एक जोड़ी कपड़े, एक रुमाल रखते हैं। हर कटोरी में चार बादाम और एक छुहारा रखते हैं और लोटे में पांच बादाम, दो छुहारे और रुमाल रखकर पूजा करते हैं। यह सारा सामान बाद में बहन, बेटी या ननद को देते है।

अहोई अष्टमी

की कहानी और पूजा की विधि

ऑइकन को स्पर्श करे

WHITE BERRY
RESIDENCY
Thakur Complex
FESTIVAL BONANZA
1 BHK
1.19 CR*
2 BHK
1.77 CR*
All
Inclusive
*T&C Applied
Visit Sample FLAT Now!!
www.whiteberryresidency.com
98705 80810, 85913 69996
MAHA RERA NO : P51800027240

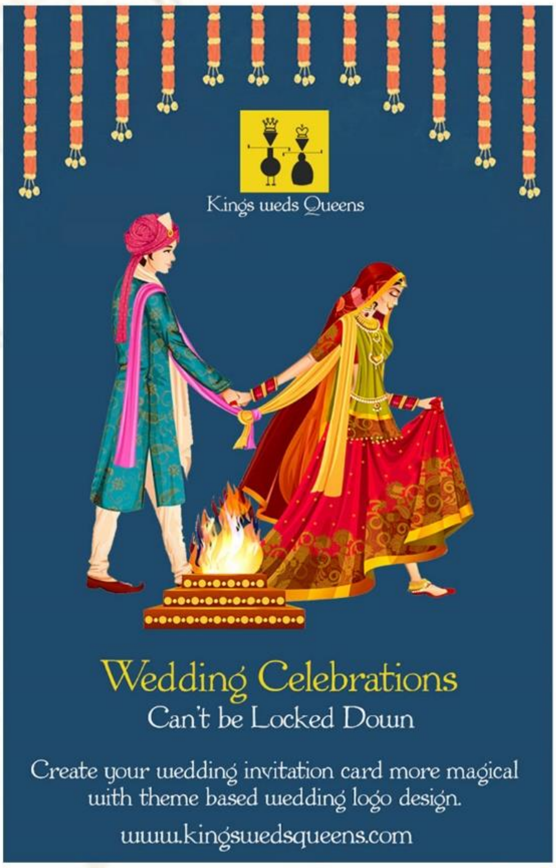
Kings weds Queens
Wedding Celebrations
Can't be Locked Down
Create your wedding invitation card more magical
with theme based wedding logo design.
www.kingswedsqueens.com

MXCREATIVITY
Brand Creation & Digital Marketing
CALL US AT
+91 8080518745
We Build Your
BRAND
Story
to inspire your audience
Logo Design
Graphic Design
Website Design
Content Writing
Digital Marketing
Ecommerce Solution
www.mxcreativity.com

देश की पहली
साहित्यिक ई-पत्रिका
जो पढ़ी और सुनी
भी जा सकती है
तथा जिसमें संगीत के
लिंक्स भी है जिनसे
निर्मल आनंद
उठाया जा सकता है।

मूल्य : मात्र आपकी मुस्कान

सामने दिए गए चिह्न को दबाने से आपका सन्देश स्वचालित रूप से पहुँच जायेगा और नियमित पत्रिकाएँ भेजने के लिए आपका मोबाइल नं. पंजीकृत हो जाएगा।

पत्रिका खोलने के लिए क्लिक करें

यदि आप किसी कारण से चिह्न द्वारा संदेश नहीं भेज पाए तो निम्न मोबाइल नम्बर के वाट्सऐप द्वारा अपना संदेश भेजें।

8610502230 (केवल संदेश हेतु)
(कृपया अपना नाम व शहर का नाम भी लिखें)

भारतीय परम्परा मासिक ई-पत्रिका
के पुराने अंक को देखने के लिए किताब पर क्लिक करें !!

हार्दिक आभार

www.bhartiyaparampara.com